गुरुवाणी

भावनाओं में बहने वाले या भावनाओं के वशीभूत हो, किसी भी हद तक जाने वाले मनुष्य हमेशा कष्ट का सामना करेंगे। भावनाओं से सर्वथा अछूते रहने वाले भी दुःख झेलेंगे। इन दोनों स्थितियों के मध्य रमने वाले हमेशा प्रसन्न और खुश रहेंगे।

–पीठाधीश्वर बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी

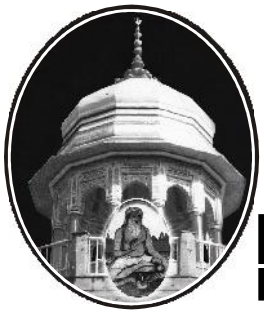

अघोरेश्वर निनाद

अघोरान्ना परो मंत्रो। नास्ति तत्वम् गुरोः परम्।।

R.N.I.UPHIN-2000/3008 Postal No. VSI-E-01/2013-2015

वर्ष-१४, अंक २४, वाराणसी। मंगलवार ३० दिसम्बर २०१४ ई० सहयोग राशि ४.२५

मानवता ही सबसे बड़ा धर्म है

पृथ्वी रूपी ग्रह पर अनन्त काल से मानव रूपी जीव का प्रादुर्भाव है। मानव को सृष्टि का सर्वोत्तम कृति माना गया है। मनुष्य या मानव महज हाड़ मांस का एक पुतला नहीं है बल्कि वह इस सृष्टि या पृथ्वी का ऐसा स्वरूप है जिसे अज्ञात, प्रकृति या ईश्वर अपने कृतियों का अप्रतीम उदाहरण बनाकर स्वयं भी इससे तृप्ति पाते हैं। इस जीव का सृष्टि के अन्य जीवों की भाँति पेट पालन, प्रजनन करके अन्त में नष्ट हो जाना अभिप्राय या अभीष्ट नहीं है बल्कि मनुष्य का निर्माण विधाता के द्वारा एक विशेष कार्यवश ही किया जाना सिद्ध होता है। चाहे वह धरा के जिस भूभाग में जन्मा हो। वह मात्र सर्वांग सहित इन्द्रियों के केवल सुखोपभोग के प्रयोजन से यहाँ नहीं आया है न तो वह दो पैरों, दो हाथों वाला चलता फिरता साँस लेता हुआ महज एक प्राणी ही है। मानव के शरीर के निर्माता के रहस्य को जानने का प्रयत्न अभी तक अनन्त काल से मानवों द्वारा की जा रही है परन्तु इसका रहस्य भेदन अभी तक संभव नहीं हो सका है। आज भी शरीर विज्ञानी जीवन पर्यन्त इसकी खोज में बड़े ही चैतन्यता एवं एकाग्र आत्मीयता से लगे है। फलस्वरूप प्रतिवर्ष नयी-नयी खोजों के लिये जीव विज्ञानियों को नोबल पुरस्कार से नवाजा जाता है। फिर भी रहस्यमय शरीर के अवयवों की संरचना, नस, नाड़ी, सुषुम्ना, रक्त कोशिकाएँ, तंत्रिका तंत्र एवं मस्तिष्क की संरचना आदि की खोज मानव को और निरन्तर जिज्ञासु बनाता जा रहा है। ऐसी है प्रकृति प्रदत्त मानव की यह देह जिसे पाने के लिये देवगणों को भी लालायित होने का तथ्य हमारे पुराणों में वर्णित हैं। **''बड़ा भाग मानुष तन पावा।''** को दुर्लभतम कहा गया है। ऐसे विचित्र देहधारी को मनुष्य कहते हैं जो प्राण सहित शरीर के आवरण में चलता फिरता सोचता व सुरक्षित रहता है। साथ ही तथ्य यह है कि यह शरीर एक निर्धारित एवं सुनिश्चित अवधि हेतु ही सर्वज्ञ के द्वारा प्रदान किया गया है। इसके मालिक को मनुष्य कहते हैं। जो परमात्मा का ही अंश है। मनुष्य के कर्म एवं प्रारब्धानुसार इस शरीर रूपी आलय को किसी भी समय या स्थान विशेष पर त्यागने, छोड़ने का आदेश होने पर अन्य विकल्प नहीं बचता। न कोई कहीं से इसके विरुद्ध स्थगनादेश ही पाता है। अतः इस शरीर रूपी गाड़ी के माध्यम से निर्धारित अवधि के अन्तर्गत विभिन्न कार्यों के सम्पादन के दायित्व का निर्वहन करना होता है। जिसे एक कुशल चालक की भाँति सतर्कता पूर्वक बड़े ही सूझबूझ व जीवन रूपी यात्रा के मार्ग में ईश्वर या संतों द्वारा निर्दिष्ट नियमों की परिधि में रहकर चलाना होता है। इसमें क्षणिक असावधानी, आलस्य, लापरवाही प्रमाद इस शरीर रूपी चलती हुई गाड़ी को मानसिक या शारीरिक रूप से क्षतिग्रस्त कर सकता है। इसे ही मानवता की संज्ञा दी जा सकती है। जो किराये के रथ के कुशल संचालन में निहित है ताकि मार्ग में कोई अवरोध न हो तथा अपने बंधुओं के साथ जीवन पर्यन्त बड़े ही प्रेम व उत्साह से एक प्रशिक्षित चालक की भाँति गाड़ी का नियंत्रण कर सके एवं इसी प्रकार के प्रशिक्षण संस्थानों के प्राचार्य अथवा प्रिंसिपल की भूमिका में संतों को श्रेणीबद्ध किया जा सकता है। यद्यपि रसायन वैज्ञानिक प्राण निकलने पर ऐसे विशेष रथ या मृतक शरीर का विश्लेषण विभिन्न तत्त्वों, धातु, अधातु एवं लवणों आदि का बना सिद्ध करते हैं। जिसका मूल्य बाजार में नहीं के बराबर है। इसी को व्यापक रूप से शास्त्रों में यथा रामचरितमानस के दोहे में—

क्षिति जल, पावक, गगन समीरा।
पंचरचित यह अधम शरीरा॥

के अवयवों से शरीर की रचना बतायी गयी है। इस शरीर को प्राण के अभाव में अधम कहा गया है। इसी प्रकार महाराजश्री बाबा कीनाराम के शब्दों में—

तामे तीन पुरुष भये,
परम चतुर एक नारी।
नभ, क्षिति, पावक, पवन,
जल रचना जगति विचारी॥

में भी शरीर एवं सृष्टि का निरूपण इन्हीं पदार्थों का बना हुआ बताया गया है। यानी सारांश में हम कह सकते हैं कि मनुष्य सृष्टि में उसी तरह है जैसे प्रत्येक मानव शरीर में सर्वोत्कृष्ट भाग मस्तिष्क को माना गया है। मानव शब्द से ही पूरी सृष्टि के प्रणेता का भाव जाग्रत हो जाता है। यद्यपि मानव विज्ञान के अध्ययनकर्ता मानव की इस यानी वर्तमान रूप को अनादि काल के पश्चात् कई युगों से विकसित होकर अन्ततः सभ्यता के युग में पदार्पण किया हुआ मानते हैं तथा इसके लिये मानव विज्ञानी दृष्टान्त भी देते हैं।

यद्यपि इस अधुनातन विज्ञान के युग में संचार क्रान्ति एवं विभिन्न माध्यमों से आज वैश्विक स्तर पर मनुष्य पूर्व की अपेक्षा निश्चित ही विकास कर गया है। परन्तु उसके मन-मस्तिष्क में उद्विग्नता बढ़ती जा रही है। विश्व में चाहे कोई धर्म हो, पंथ हो, सम्प्रदाय, समाज या समुदाय हो सभी में मानव हित रक्षा, प्राणी मात्र से परस्पर प्रेम, साहचर्य एवं अहिंसा का पाठ पढ़ाया गया है तथा सबके मूल में मानव के कल्याण की ही भावना निहित होती है। परन्तु विडम्बना यह है कि दिनोंदिन विश्व में एक भयंकर अग्नि की ज्वाला मनुष्यों के समुदाय को उनके जड़ दुर्बुद्धि के कारण भस्मीभूत करती जा रही है। वर्तमान काल में विश्व के एक भाग में एक विशेष समुदाय के कुछेक सिरफिरों द्वारा धर्म की आड़ में मानव संहार तथा बर्बर रक्तपात से आधुनिक समाज को लगातार चुनौती मिल रही है। प्रत्येक राष्ट्र या देश में चाहे वह किसी रूप में हो मानव नरसंहार, जनसंहार की लपट बढ़ती ही जा रही है। इसका एकमात्र कारण मानव में मानवता का अभाव होना ही है। उदाहरणस्वरूप यदि कंचन काया लम्बी चौड़ी देहयष्टि का मानव जन्मान्ध या नेत्र रहित हो जाये तो उसे संसार अंधकारमय ही दिखायी देता है। इसमें उसका पूरा-पूरा दोष न भी हो तो भी वह इस सामाजिक ज्ञान का अधिकारी तो होता ही है कि उसे समाज के द्वारा संसार के विविध रंगों, रूपों की यथार्थता बतायी जाय एवं उसे भी यथा संभव प्रकृति के उपहारों के सुखानुभूति से अवगत कराया जाय। इसी कार्य को ध्यान में रखते हुए विभिन्न साधकों ने यथासंभव मानव धर्म की विवेचना किया है तथा मानव को वास्तविक मानव बनने के लक्षणों को युक्ति संगत ढंग से बताया है। यद्यपि इसे हमारे भारत के संविधान वेत्ताओं ने भी संविधान के मूल प्रस्तावना में प्रतिपादित किया है। जिसमें समस्त नागरिकों को समानता, व्यक्तव्य की स्वतंत्रता सम्पत्ति अर्जन एवं कारोबार करने की स्वतंत्रता तथा सबको समान न्याय की अवधारणा, एकता एवं भाईचारा की भावना से युक्त किया गया है। परन्तु आज स्वतंत्रता प्राप्ति के छः दशक बाद भी हमारे भारतीय समाज में बेहद गरीबी, बीमारी, अशिक्षा, कुपोषण, रुग्णता

शेष पृष्ठ दो पर

सच्ची साधना एक पुरुषार्थ

साधना, सफलता, सद्प्रयास सबका सीधा सम्बन्ध साहसिक पुरुषार्थ से होता है। विश्वभर में जीतने भी जीवन्त व्यक्तित्वों ने अपने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में धाक जमायी है, चाहे वह सामरिक, अध्यात्मिक, कला-कौशल, क्रीड़ा, विज्ञान, अविष्कार या संगीत का क्षेत्र हो, सबमें महत्वपूर्ण स्थान उस व्यक्ति विशेष के आत्मविश्वास और लक्ष्य के भेदन हेतु किया गया विराट पुरुषार्थ ही होता है। एक सच्चा महात्मा अपने कई-कई जन्मों के पुरुषार्थ एवं प्रारब्ध के बल पर ही इस मायावी संसार में कमलवत रहते हुए अनुयायियों के लिये प्रेरणा का स्त्रोत बना रहता है। पुरुषार्थ के सुगंध साधक के साथ उसकी साधना को निरन्तर दम दम महकाये चली जाती है जब वह **''सब तज हरि भज''** को चरितार्थ करते हुए अपने पूरे मनोयोग, लगन, परिश्रम एवं सच्चे हृदय से लक्ष्य को समक्ष रख लगातार मेहनत यानी पुरुषार्थ करता जाता है तो एक दिन अवश्यमेव सफलता की देवी वर माला उसके गले डालने को बाध्य होती हैं।

आये दिन हम अपने आस-पास एवं चारों तरफ घट रहे घटनाक्रम को ही देखें, विपन्न का भी बेटा या बेटी सफलता के उच्चतम शिखर पर, अपने पौरुष एवं पुरुषार्थ के आधार पर ही नजर आ रहा है। इसी का दूसरा नाम साधना भी है यानी अध्यात्म के क्षेत्र में भी इसी का बोलबाला है, पुरुषार्थ रहित प्रार्थना तो ईश्वर या गुरु के द्वारा भी स्वीकार नहीं की जाती, यदि आप जागरूक नहीं है, आलसी है, प्रमादी हैं, अनियमितता के आदी है, लापरवाह है तो उसी अनुपात में आपका ओजस, तेजस एवं वर्चस भी घटता जायेगा, जो आपके अपने लक्ष्य यानी अपने गुरु या भगवान, इष्ट से भी दूरी बढ़ाता रहेगा, आपमें असमर्थता एवं परावलम्बन की भावना घर करती जायेगी।

सच्चा सद्गुरु या ईश की कृपा यदि किसी के ऊपर होती है तो वे उसे सीढ़ी से या क्रेन के सहारे सदृश ऊँचा नहीं उठाते, बल्कि उसमें एक साहसिक संचार भर देते है, वह बालक अथवा बालिका दिनोदिन विलक्षण गुणों से युक्त होते जाते है, उनमें अपने को आत्मनिरीक्षण कर अपनी कमियों को दूर कर लेने का अदम्य साहस, उत्साह आ जाता है। वे हर असफलता के बाद दूने जोर शोर से अपनी कमियों को इंगित कर उसे पूरा करते हैं फिर वही बालक या बालिका राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना स्थान बना लेते हैं।

इतिहास साक्षी है कि जो भी महापुरुष हुए हैं उन्हें इसके लिये स्वयं ही भरपूर श्रम, साधना एवं पवित्र पुरुषार्थ करना पड़ा है, महर्षि विश्वामित्र, परशुराम से लेकर ऋषि पाणिनी, पातंजलि तक ने गहन तपस्या करके ही सफलता को प्राप्त किया है, जो उनके तपबल यानी साधना के प्रखर फल का परिणाम रहा है। उन्होंने भी अपने समय में विकराल झंझावातों को काटते हुए, बाधाओं का समन करते हुए अपने को सिद्ध किया है। थोड़े, अधकचरे, अपूर्ण या आधे मन से किया गया प्रयास उतने ही अनुपात में फल भी देता है, जबकि जैसी भी परिस्थितियाँ सफलतम व्यक्तियों के जीवन में आयी हैं, उस गहनतम अन्धकार को चीरने के बाद ही उन्हें दिवाकर की लालिमा का दर्शन हुआ है।

कहने का तात्पर्य है कि आधुनिक युग के इस संघर्षशील समय में आज परिश्रमी एवं मेधावी होते हुए भी यदि विभिन्न क्षेत्रों के साधक यानी छात्र, छात्रायें हो मेहनतकश मजदूर हो, वैज्ञानिक, प्रतियोगी परीक्षाओं के अभ्यर्थी हो, यदि थोड़ी भी निराशा, कुंठा या संदेह के बादल उन्हें घेर रहे हैं तो समझिये साधना की देवी अपने समक्ष उस अभ्यर्थी से अभी और साधना किये जाने की अपेक्षा कर रही हैं तथा सफलता का प्रमाण-पत्र हाथ में लेकर खड़ी हैं।

C-अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान् के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक **अरुण कुमार सिंह** द्वारा महादेव प्रेस, बी.3/335, रविन्द्रपुरी कॉलोनी, भेलूपुर, वाराणसी (उ0प्र0) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक : चन्द्र नाथ ओझा

ग्राफिक्स : आशीष कुमार बरनवाल

☎ **0542-2277155.**

e-mail–neenad@aghorpeeth.org

www.aghorpeeth.org

प्रथम पृष्ठ का शेष

मानवता ही सबसे बड़ा धर्म है

ने अपना स्थायी स्थान बनाया है। दिनोंदिन भारत की जनसंख्या विकास को कम करती जा रही है। ऐसे में अघोर परम्परा के साधकों द्वारा बड़े ही सरल एवं संक्षेप में मानव को मानव बनने का यंत्र उसके कर्मों के सम्पादन से ही प्रदान किया गया है। जिसमें स्वार्थ, अविश्वास, धोखाधड़ी, असत्य आदि को क्षणिक लाभ के लिये न अपनाकर उसे त्याज्य बताया गया है।

मानव का गुण, धर्म, लक्षण आपस में साहचर्य, भाईचारा, एकता, सौहार्द्रता बढ़ाने का है। जिससे सामूहिक लाभ में ही व्यक्तिगत लाभ समाहित रहता है।

जैसाकि मैथिलीशरण गुप्त की निम्न पंक्तियों में मानवता का चित्रण किया गया है—

यही पशुप्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे।
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिये मरे।

यानी उपर्युक्त भाव से स्पष्ट है कि यदि एक मनुष्य दूसरे मानव के काम नहीं आया, उसके अन्दर सहकारिता, मेल-मिलाप का भाव नहीं है तो उसका जीवन निष्प्राण है। इसी भाव को व्यापक बनाते हुए गोस्वामी जी ने भी गाया है कि—

परहित सरिस धर्म नहीं भाई।
परपीड़ा सम नहीं अधमाई॥

यानी सर्वधर्मों के मूल में परहित को ही उत्कृष्टता प्राप्त है तथा परपीड़ा या परदुःख देने जैसा कोई महापाप भी नहीं है।

ईश्वर या प्रकृति के द्वारा प्रत्येक मानव का जन्म एवं मृत्यु की प्रक्रिया का प्रकार एक समान ही रखा गया है। जैसाकि कहा भी गया है कि- **जो जन्म लिया है उसका अन्त भी सुनिश्चित है।** जैसा कि कबीरदास जी ने भी सरल शब्दों में कहा है कि—

आये हैं सो जायेंगे राजा रंक, फकीर।
एक सिंहासन चढ़ चलें, एक बँधे जंजीर॥

अतः जन्म तथा मृत्यु के मध्य में ही मानव की जीवन यात्रा होती है तथा उसी में अपने जीवन के उतार चढ़ाव, सुख-दुःख, अच्छा या बुरा बर्ताव से दो चार होना पड़ता है। परन्तु वही अपने इस जीवन यात्रा में कुछ पाता हैं, जो सही अर्थों में मानव है। अन्यथा अकारथ जीवन स्वप्नवत् अन्धकार एवं पीड़ा में दुःख देते एवं दुःख सहते हुए गुजर जाता है। इन्हीं तत्त्वों को मानव में उत्प्रेरित करने के लिए इसी गुण, धर्म को प्रज्वलित करने के लिए अघोर साधकों ने बिना जाति-पांत, धर्म-सम्प्रदाय, राष्ट्र, क्षेत्र या बिना देश विशेष का ध्यान रखते हुए मानव मात्र को त्राण देने के लिये विभिन्न विधाओं को समय-समय पर समाज में प्रस्तुत कर उसे क्रियान्वित कर समाज को लाभान्वित किया है। इसी क्रम में परम पूज्य अघोराचार्य बाबा कीनाराम से लेकर परम पूज्य औघड़ भगवान राम तथा वर्तमान में काशी कीनाराम स्थल के पीठाधीश्वर जी द्वारा भी मानव में मानवता का उत्तरोत्तर विकास कैसे हो इस हेतु अपने-अपने समय व काल के अनुसार प्रत्यक्ष रूप में समाज में उतर कर उसे सफल बनाने के लिये कृत संकल्पित है।

अब सवाल यह है कि क्या आज सभ्यता एवं विज्ञान के इस युग में भी मानव अपने पूर्वजों, पुरोधाओं, ऋषि, मुनियों की अपेक्षा सुख शान्ति और अच्छा स्वास्थ्य धारण कर रहा है? क्या उसे मनोवांछित फल की प्राप्ति मानसिक संतृप्ति प्राप्त हो रही है? उसकी संतान क्या मनोनुकूल कार्य या व्यवहार कर रही है। इन प्रश्नों का उत्तर हमें अधिकतर नकारात्मक रूप में ही प्राप्त हो रहा है। इसका क्या कारण है? हम कहाँ गमन कर रहे हैं? कहीं भौतिकता, आपाधापी के स्वर्णिम प्रतीत होने वाले अंधेरे कुँए की तरफ तो नहीं उलटे दौड़ लगा रहे हैं? उपरोक्त प्रश्नों पर विचार के लिये हमें थोड़ा संवरण करना पड़ेगा एवं एकान्त में सोचने के लिए समय निकालना पड़ेगा ताकि दिनोंदिन के बढ़ते इस जीवन संघर्ष में हमारी गतिविधि को रक्षा कवच लगे, हमारी हर स्थिति परिस्थिति में सुरक्षा हो सके। एवं ऐसे रास्ते सुगम पथ पर हम अग्रसर हो जहाँ थोड़े अभ्यास, प्रयास से आशातीत फल की प्राप्ति सुगम हो सके। सौभाग्य से आज के वर्तमान काल में कम से कम भारत में पूर्व की अपेक्षा मनुष्यों की औसत आयु में इजाफा हुआ है। शिक्षा का प्रतिशत भी बढ़ा है। देश में डिग्रीधारियों की संख्या भी बढ़ रही है। पर क्या समस्त डिग्रीधारक वास्तव में शिक्षित हो रहे हैं। क्यों अधिकांश पढ़े लिखे युवाओं की सोच विकृति की ओर अग्रसर है। उन्हें विलासिता या व्यसन इतना क्यों आकर्षित कर रहा है? इसका सपाट जवाब यह है कि सब कुछ के पश्चात् भी मानव में मानवता के गुणों का अभाव होता जा रहा है। जिसे देखते हुए व्यथित लोगों की आर्त पुकार युवाओं, युवतियों, नौनिहालों की वेदना कराह को सुनकर औघड़ संत या समाज सुधारक चुप नहीं बैठ सकते। उतनी ही तेजी से उनके द्वारा समय काल का ध्यान रखते हुए शरीर धारण कर समाज को तराशने, सही राह दिखाने के लिये तत्परता से अहर्निश कार्य किया जाता रहा है। वे अपने प्रिय मानव के मर्मान्तक पीड़ा को सहन नहीं कर सकते। परदुःख से वह स्वयं उद्वेलित हो जाते हैं तथा संसार को सरस बनाने एवं व्यर्थ की व्यथा को काटते रहने का सरंजाम रात दिन इकट्ठा कर उसे मानव

शेष पृष्ठ तीन पर

मानवता ही सबसे बड़ा धर्म है

द्वितीय पृष्ठ का शेष

समाज को प्रदत्त किया जाता रहा है। बस जरूरत है उसे प्रत्येक मानव मात्र के द्वारा पात्रता बढ़ाकर हृदयांगम करने की, सुधारस को पान करने की, भले ही उसका स्वाद तत्काल थोड़ा कसैला हो तथा मनभावन प्रतीत न हो।

इसके लिए आवश्यक है कि हर कदम पर प्रत्येक व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से सर्वप्रथम अपने पर ध्यान दें। औघड़ वाणी के अनुसार अपने पर दया करें यानी खुद को शोधे, संवारे, सुधारें एवं अपने चाल-ढाल, सोच, कर्म, वाणी रहनी पर विशेष सतर्कता बनाये रक्खें। इन्हीं तथ्यों के विभिन्न अवसरों पर संक्षेप में औघड़ संतों द्वारा व्यक्त किया जाता है ताकि समाज, राष्ट्र एवं अन्ततः विश्व स्तर पर प्रत्येक इकाई का स्वस्थ योगदान मानवता के भव्य निर्माण में हो सके। आज सभी राष्ट्रों के मध्य हथियारों की होड़ लगी है एवं हिंसा व्याप्त है। इसके सफल निराकरण हेतु परिवार से लेकर विश्व स्तर पर भी आपसी तालमेल बन सके। राष्ट्रों के मध्य परस्पर सैद्धान्तिक विचारधाराएँ मेल खायें सभी में दया, प्रेम, अपनापन का संचार हो तथा दूषित मनोवृत्ति गलत विचारों से मानवता को मुक्ति के सूत्रों को अपनाने का कार्य ही एकमात्र उपाय है। इन्हीं स्थितियों को व्यापक बनाने हेतु औघड़ी वाणियों में संकेत किया गया है। जिससे राष्ट्रों के मध्य सेवा-भाव, आपसी करुणा आदि का समावेश हो। फलतः मनुष्य में विनम्रता, सरलता, सत्यवादिता, परोपकारिता का सद्गुण विकसित हो सके।

इन्हीं बिन्दुओं को सर्वग्राही बनाने के लिये जन-जन के द्वारा अपनाने के लिये बिना किसी भेदभाव के परम पूज्य अवधूत भगवान राम जी के द्वारा 21 सितम्बर 1961 को सर्वप्रथम काशी के मण्डुवाडीह नामक स्थान पर हाजी सुलेमान साहब के बगीचे में सर्वेश्वरी समूह की स्थापना की गयी। जिससे कि मानव मात्र में उसके खुद के प्रभामण्डल से ही एक सौन्दर्य का विकिरण हो जिसका प्रभाव उसके आस-पास भी पड़ता रहे एवं इन्हीं उद्देश्यों को सफल बनाने के लिए वर्ष 1978 के गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर समाज के उत्थान के लिये 19 सूत्रीय कार्यक्रम की घोषणा भी की गयी ताकि भूले भटके मनुष्यों के लिये एक सुअवसर की प्राप्ति हो एवं सम्पूर्ण मानवता का लाभ समाज को प्राप्त हो सके। वर्तमान समय में भी उसी मानवता की परम्परा को कायम करने एवं उसे दिनोंदिन धारदार बनाने हेतु वर्तमान पीठाधीश्वर जी द्वारा भी समय-समय पर युवा सम्मेलनों, गोष्ठियों आदि के माध्यम से समाज की बुराईयों, कुरीतियों को दूर करने दरिद्र नारायण की सेवा करने, वृक्षारोपण, सफाई आदि की शृंखला अनवरत जारी है। समाज में लोग चरित्रवान हो, राष्ट्रीय विचारधारा से ओतप्रोत हो, संयमित होकर अपना कार्य करें तथा परस्पर सौहार्द की भावना को बनाये रखना ही सच्चे मानवता का गुण, धर्म एवं स्वभाव होता है। इससे एक विशिष्ट शान्ति, आनन्द की अनुभूति होती है। अन्यथा इधर-उधर भटकना रेगिस्तान में जल प्रपात खोजने जैसा सिद्ध होता है। चौबीस घंटे इन्हीं पुनीत संस्कारों को फैलाने हेतु अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान की स्थापना की गयी है। जिसके कार्यों से सिद्ध होता है कि—

चौबीस घंटे इस दरबार में चलता कारखाना है,
मानव का निर्माण यहाँ औघड़ का ताना बाना है।
अनगढ़ पत्थर से औघड़ की छेनी जो टकराती है
करिश्माई मूर्ति बनकर प्राण प्रतिष्ठा पाती है।
औघड़ हैं सद्योजात जिनकी दुर्लभ अमृत वाणी है।
देते देते भी अघाते नहीं ऐसे औघड़दानी हैं।

अघोरेश्वर से हमारी भावना यही प्रार्थना है कि हमारी भावना दूसरों के सुख में सुख एवं दुःख में दुःख के अनुभव का हो। हमें अपने भाई, बन्धु, पड़ोसियों से सदा अच्छा व्यवहार तथा महिलाओं का सादर सम्मान करने तथा उन्हें शक्तिस्वरूपा समझने की शक्ति प्रदान करें ताकि इस **वसुधैव कुटुम्बकम्** में **सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयः** की भावना से हम जीवन यापन करते रहे।

''जय अवधूत सिंह शावक राम''

परतंत्रता की बेड़ी थी, उन्नीस सौ इक्कीस साल;
नवजात शिशु के तन में थे एक संत बेमिशाल;
माता जी ''हंसराजी देवी'' पा गई थीं लाल;
पिता ''श्री गोपी सिंह'' जी के चमक उठे भाल;
जय अवधूत ''सिंह शावक राम''
पितृकुल आयर में था पथार में ननिहाल;
बिहार भोजपुर के दोनों ग्राम्य थे निहाल;
पले-बढ़े हासिल किये विविध विषय का ज्ञान;
राष्ट्र की आजादी में बढ़ चढ़ के योगदान;
जय अवधूत ''सिंह शावक राम''
कार्य जिम्मे था जटिल अध्यात्म का महान;
लक्ष्य मानवोत्थान का सतत ही रहा ध्यान;
तत्काल आये गुरुशरण पड़ाव दिव्य धाम;
प्रतीक्षारत थे शिव जहाँ, ''औघड़ भगवान राम'';
जय अवधूत ''सिंह शावक राम''
अवधूत अग्नि में तपे दिन-रात सुबहो-शाम;
गुरु वरद था नाम पाये ''सिंह शावक राम'';
कर्त्तव्य पथ पे चल पड़े अविचल बिना विराम;
प्रचण्ड समयबद्धता के साथ किए काम;
जय अवधूत ''सिंह शावक राम''
बाल्यकाल बाबा की किये थे देखभाल;
स्थल के भी विकास हेतु चल रहा था काल;
दायित्व सौंप आपको प्रसन्न महाकाल;
सर्वेश्वरी का ध्वज लिए जला दिये मशाल;
जय अवधूत ''सिंह शावक राम''
सोनभद्र, अनपरा, डाला में डेरा डाल;
दिलदारनगर आकर काटे थे विविध जाल;
मसूरी में था महाप्रयाण आश्रम था कैम्पटी फाल;
''चिर-समाधि'' कर लिये अनहद का पर्दा डाल;
दिलदारनगर आश्रम ''गिरनार'' को प्रणाम;
जहाँ से सिंहनाद किए ''सिंह शावक राम''
जय अवधूत ''सिंह शावक राम''
जय अवधूत ''सिंह शावक राम''
जय अवधूत ''सिंह शावक राम''

हर हर महादेव!

''चुनचुन''

निर्वाण दिवस

परम पूजनीया आदरणीय माँ महामैत्रायिनी योगिनी जी का निर्वाण दिवस हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी दिनांक 13.01.2015 को क्रींकुण्ड स्थल, (प्रधान कैम्प कार्यालय, सर्वेश्वरी समूह, वाराणसी) के साथ ही सर्वेश्वरी समूह एवं अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान के समस्त शाखाओं पर मनाया जायेगा। इस अवसर पर सभी अघोर पथिकों, श्रद्धालु भक्तों एवं प्रेमीजनों से सादर अनुरोध है कि इस पुनीत अवसर पर प्रतिभाग करके स्वयं एवं अपने परिवार को धन्य बनावें।

कार्यक्रम

1. प्रातः श्रमदान एवं सफाई। 2. पूर्वाह्न 9 बजे से माता जी की समाधि का पूजन, आरती एवं प्रसाद वितरण।

कम्बल वितरण

अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान, क्रींकुण्ड, वाराणसी के साथ ही अन्य शाखाओं यथा बहराइच जनपद के सुदूर ग्रामों में यथा रजनवा, भवनियापुर, सेमरी मलमला, कारी कोट के निराश्रित एवं निर्बल असहाय जनों के मध्य कम्बल वितरण का कार्यक्रम श्री उदयभान सिंह जी, मंत्री सर्वेश्वरी समूह के नेतृत्व में सम्पन्न किया गया।

उपरोक्त के साथ ही सर्वेश्वरी समूह एवं संस्थान की शाखाओं रायगढ़ (छत्तीसगढ़) में 500, आरा (बिहार) में 250, गोरखपुर में 100, म्योरपुर 500 कम्बल सुपात्र जनों के मध्य वितरित किये गये। इसके अतिरिक्त अघोर सेवा मण्डल द्वारा अनपरा (उ0प्र0) में 250, डाला, बीजपुर, दिलदार नगर शाखाओं पर भी कम्बल वितरण का कार्य सम्पन्न हुआ। इसी प्रकार रामपुरमांझा, (बाबा कीनाराम कुटिया) जिला-गाजीपुर (उ0प्र0) में 100 अदद कम्बल को कीनाराम कुटिया संस्थान द्वारा वितरित किया गया। साथ ही उ0प्र0 के अन्य शाखाओं मैलानी एवं मोहम्मदी (खीरी) में भी कम्बल वितरण का कार्य सम्पन्न किया गया।

नेत्र शिविर

अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान तथा अघोर सेवा मण्डल के अध्यक्ष पीठाधीश्वर परम पूज्य बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी के तत्वावधान में रामपुरमांझा, गाजीपुर (उ0प्र0) में सैकड़ों नेत्र रोगियों का परीक्षण एवं 16 नेत्र पीड़ितों के नेत्र की सफल शल्य चिकित्सा सम्पन्न की गई तथा शाखा दिलदार नगर में नेत्र शल्य चिकित्सा कार्यक्रम जारी है। उसी प्रकार गोरखपुर जनपद के पिपराइच शाखा पर भी लगभग 100 से अधिक नेत्र पीड़ितों की सफल शल्य चिकित्सा सम्पन्न हुई।

अनन्य दिवस

अघोरेश्वर महाप्रभु के चैतन्यता के उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी अनन्य दिवस माघ मेला, इलाहाबाद कैम्प में आयोजित किया जायेगा एवं अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान, क्रींकुण्ड, वाराणसी (उ0प्र0) तथा सर्वेश्वरी समूह व अघोर सेवा मण्डल के अन्तर्गत समस्त शाखा कार्यालयों पर माघ कृष्ण चतुर्दशी तदनुसार दिनांक 19.01.2015 दिन सोमवार को मनाया जायेगा। इस अवसर पर दर्शन पूजन एवं सफल योनि के पाठ में प्रतिभाग करने हेतु समस्त श्रद्धालुओं को सादर आमंत्रित किया जाता है।

साधना काल में समय का सदुपयोग

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी का आशीर्वचन

धर्म बन्धुओं!

आप लोगों से मिलकर बहुत ही खुशी होती है जब आप अच्छी मुद्रा में रहते हैं। उस वक्त आप क्रोध को मित्र नहीं बना पाते हैं, लोभ को भी अपना मित्र नहीं बनाते हैं और मोह से भी दूर रहते हैं। उस समय आपको कितनी अच्छी शान्ति मिलती है, कितना सुख मिलता है और कितना अपने दायित्व को आप समझते हैं। मैं भी जब आपलोगों को ऐसी परिस्थिति में देखता हूँ, ऐसे समावेश में देखता हूँ तो मुझे भी बड़ा आह्लाद होता है। जब मैं आपको घृणित कृत्यों में देखता हूँ जब मैं आपको घटिया काम करते देखता हूँ, जब मैं आपको अपने पर गुस्सा करते देखता हूँ तो आप सोच सकते हैं कि मुझे कितनी आपसे निराशा होती है। जब आपको एकाग्रता की तरफ देखता हूँ और साथ ही आपको मननशील देखता हूँ, आपका मस्तिष्क बिल्कुल खाली रहता है और शरीर ढीला करके उस एकान्त में देखता हूँ तो मुझे बड़ा आह्लाद होता है। मैं यह भी देखता हूँ कि आपके चारों तरफ एक वृत्ताकार अच्छा कम्पन उठा रहा है और आपके चारों तरफ एक ऐसी किरणें छिटकी हुई है जो आप ही को नहीं, जो कोई भी देखता होगा क्रोध रहित होकर, ईर्ष्या रहित होकर, घृणा रहित होकर, द्वेष रहित होकर उसे भी वह शान्ति पुकार-पुकार कहती होगी कि तुम भी नीरव हो जाओ। ऐसा नीरव हो जाओ जैसे श्मशान पर मुर्दे ले जाने के समय हम लोग कतार में कितना नम्र और अहिंसक चित्त से जाते हैं बन्धुओं! क्या ऐसे आनन्द को परित्याग करेंगे जीवन में? हाँ, आपसे इस आनन्द को परित्याग करने के लिए बाध्य किया जाता है। वह कौन करता है? यह आपका संगदोष तथा वह काल और परिस्थिति जिसमें आप रहते हैं। साथ ही आपका वहाँ का माहौल जिससे आपका चित्त दूषित हो जाता है, मस्तिष्क विकृत सा होने लगता है और हृदय विदीर्ण होने लगता है। नाना प्रकार के लोभों और मोहों से ग्रसित हो जाते हैं और बहुत से घटिया काम करने के लिये आप विवश हो जाते है। उससे अपने लिए आप स्वयं अभिश्राप बन जाते हैं बन्धुओं!

इसी को दृष्टि में रखकर वह भगवती भगवान के आस्थावान लोग जब से उनका चक्षु खुलता है, जब से वह चेतते हैं- तबसे उस तरफ उन्मुख होते हैं। वह किस तरफ उन्मुख होते हैं? उस शान्ति की तरफ, उस सुख की तरफ। वह जरा-जन्म और मृत्यु को प्रत्यक्ष देखते हैं कि वह जन्म है या जरा है और यह मृत्यु होगा। ऐसा ही होता रहा है सहस्त्रों वर्ष से, जब से सृष्टि की उत्पत्ति हुई है। कोई ऐसा घर नहीं हैं जिस घर से लोग जरा न हुए हों, उनकी मृत्यु न हुई हो और घर में कोई जन्म न लिया हो। यह सत्य सबको विदित है। हाँ, उस तरफ दृष्टि नहीं देते हैं, यह हमारी खूबी है। दृष्टि नहीं देते हैं, ठीक है। भूतकाल की तरफ दृष्टि न दें तो अच्छा ही है। मगर वर्तमान में तो जो परिस्थितियाँ हैं वह तो हमें धर दबोचने ही आयेगा। वह जायेगा नहीं बन्धुओं! इसलिए इन सभी को दृष्टि में रखकर हम मंत्र देवता गुरु में विश्वास करते हैं और उसे हम अख्तियार करने की भरसक चेष्टा करते हैं। वह कैसे करते हैं? एक तपस्वी की तरह नौ दिन निग्रहीत रहकर। हाँ, इन्द्रियों को निग्रह करके हम उस एकाग्रता को ढूँढ़ते हैं जिस एकाग्रता में सब कुछ दिन निहित है, बन्धुओं! सब कुछ पा जाने के बाद भी बेहोशी ही रहती है, तो यह क्या है? तब एकान्त ही की आवश्यकता पड़ती है। इससे वंचित रह जाते हैं उनका जीवन जरा की तरफ झुकता है। वह मृत्यु का आलिंगन करते हैं और अचेष्ट होकर पृथ्वी पर सो जाते हैं। उनका कोई अपना इतिहास नहीं होता। वह कीड़े-मकोड़े जैसे होते हैं। वैसा ही होते हैं जैसे गदहे को बहुत से औलाद होते हैं, सूअर की बहुत से औलाद होते हैं। बन्धुओं! जो कुछ उनको सड़ा-गला ढोना है (मोटरी) वह ढोते हैं और जैसी जगह पर रहना चाहते हैं वैसी जगह पर वह रहते हैं, कीचड़ों में। वह सिंह की तरह भूखे रहकर उस आरण्य में, वन में, जंगलों में जीवन जीना पसंद नहीं करते हैं। वह देखते हैं कि हम भीड़ में रहेंगे, मनुष्यों के पास रहेंगे और मनुष्य जो हैं कितने ऐसे निगाह के होते हैं, ऐसे विचार के होते हैं, जिनके बीच रहकर कोई स्वच्छन्द, स्वच्छ, निर्मल होकर निकल आये, वह ईश्वर ही की कृपा होती है बन्धुओं! नहीं तो इनके बीच रहकर बड़ा मुश्किल है। यह रहते हैं, दूषित चित्त करते हैं। एक दूसरे को चूँटी काटते रहते हैं। कुछ का कुछ अनाप-सनाप, कुछ का कुछ करते रहते हैं जिसके चलते शान्ति चित्त वाला भी मनुष्य दूषित हो जाता है। इसलिए ऐसे प्राणियों को न हम देखें और न वह हमको देखें तो बहुत खुशी है बन्धुओं! ऐसे का संग त्याग होता है। मूर्ख का संग चाहे वह अपने बाप का हो, बेटा हो, पत्नी हो, कोई भी हो, मूर्ख का संग त्याज्य कहा गया है। मूर्ख के संग से आप में आस्था नहीं उत्पन्न होती **''जाके प्रिय न राम वैदेही, तजिय ताहि कोटि वैरी सम यद्यपि परम सनेही।''** कितना ही बड़ा सनेही-अपना बेटा हो क्यों न हो यदि उसको हमारे आचार-विचार में आस्था नहीं है और व्यवहार में आस्था नहीं है तो हमारा परम चेला ही क्यों न हो, उसको मारा ठोकर। उसके संग उठना-बैठना दुश्शील है और दुश्शील के साथ रहने से जो अपनी प्रभा है, कान्ति है, तेज है और जो आपके शरीर से रश्मियाँ निकल रही हैं, वह सब मलीन पड़ जाती हैं। आप बार-बार उस पर अहंकार करते हुए दीख पड़ेंगे और उन अहंकारों में वह भयंकर क्रोध छिपा रहेगा जो आपका है नहीं, आपके पास आ जाता है। वह जब तक वहाँ से चला नहीं जाता है, तब तक आपको शान्ति नहीं मिलेगी, सुख नहीं मिलेगा।

इसी को दृष्टि में रखकर हम मंत्र जाप करते हैं। वह मंत्र है क्या? हम उस एकाक्षर को जपते हैं जिसमें कोई नाम नहीं लगा है। जिसमें किसी देवता-देवी का नाम जुड़ा हुआ है वह मंत्र नहीं होता बन्धुओं! वह मंत्र नहीं होता है। वह तो किसी को आवाहन और विसर्जन करने का और किसी को फँसाने की उस कटिया की तरह है जिससे मछली फँसायी जाती है। फँसी, नहीं फँसी निकल गयी। मगर जो मंत्र होता है बन्धु! वह स्वत: जैसा आप इच्छा करते हैं वैसा ही होता है वह। वह बहुत विमल फल देने वाला होता है। उसमें किसी का नाम नहीं है, किसी का ध्यान नहीं है और किसी के लिए कोई प्रार्थना नहीं है। वह अनवरत चलता रहता है। आप गीता और रामायण को महान शास्त्र मानते हैं। गीता में भी कहा गया है कि जप यज्ञ सभी यज्ञों से बढ़कर हैं और जप किसका होना चाहिए? उस ब्रह्म-विद्या का। वह ब्रह्म-विद्या है क्या? एकाक्षर। उस एकाक्षर का क्या प्रभाव है? वह हम आप कह नहीं सकते। यदि हमने उसे अपने गुरुजनों से सीखा है और जानता हूँ और वह सही, हमको आतुरता में नहीं बतायें होंगे, सही हम उनके नजदीक जाकर इस बात की जानकारी किये होंगे, तो हमारी कोई भी विद्या निष्फल नहीं जायेगी। वह फलवती होकर ही रहेगी। उसका फल मुझे कैसे प्राप्त होगा? यह मैं नहीं जानता हूँ। उसका क्या प्रभाव होगा? मैं भी नहीं जानता हूँ। उसका कोई जन्मदाता नहीं है। ऐसा नहीं कि वह फलाने देवता उसके जन्म दाता है उस फल के अपने अनुकूल फल होगा। तो इसलिए बन्धु! जो मैं देख रहा था शाम को बैठकर सोच भी रहा था कि कितना गम्भीर चिन्तन चला आ रहा है अनिवार्य रूप से। सन्निकट रहते हुए कितना दूर का अनुभव कर रहे हैं और कितना एकाग्रता का अनुभव कर रहे हैं, साधक लोग। इनमें कोई भी किसी तरह की कोई तृष्णा नहीं है, कामना नहीं है, इच्छा नहीं है। यह है कि हे माता! आपको शरणागत हूँ। आप मुझे अभय दो। उनका हाथ यदि ऊपर उठता है तो इसे अभय कहते हैं और उनका हाथ यदि नीचे उठता है तो इसे वर कहते हैं। हमें वर की तो आवश्यकता अभी नहीं है। अभय की आवश्यकता है। जैसे लक्ष्मी और गणेश की साथ पूजा का कोई तुक नहीं है बन्धु! मगर गणेश बुद्धिदाता है और लक्ष्मी बुद्धि को भ्रष्ट करने वाली है तो किसी भी लक्ष्मीपति के पास यदि बुद्धि न हो तो उसका वह नाश करके रख देंगी। इसलिए गणेश की पूजा की जाती है कि हे गणेश! हमारे बुद्धि के दाता, हमें पहले बुद्धि दो और उसके बाद तब लक्ष्मी का आगमन हो। यदि नहीं, उन्हीं का आगमन पहले हो गया और आप नहीं हमारे को संभाल सके, तब तो हमारा नाश सुनिश्चित लिखा हुआ है। हम उन्माद होंगे, उन्मादी होंगे, अनेक प्रकार के घटिया कर्म करेंगे और घटिया कर्म करके अपना स्वास्थ्य खराब करेंगे। अपने अनेक प्रकार के लक्षणों से लोगों द्वारा प्रताड़ित होंगे, परिलक्षित होंगे और हम अपमानित होंगे। इसलिए वहाँ उनकी (गणेश) पूजा की जाती है, बन्धुओं!

शेष अगले अंक में

अघोर सूत्र

☞ गदहे, कुत्ते और अनेक पशुओं का अपना चरित्र है। मनुष्य को भी चाहिए कि अपने सन्तान के लिए चरित्र हो। यदि चरित्र नहीं होगा तो सन्तान का भी चरित्र नहीं होगा।

☞ पुरुषार्थ और आत्मविश्वास के बिना मनुष्य न तो लौकिक उन्नति कर सकता है और न पारलौकिक। लौकिक उन्नति के लिये शिक्षा की आवश्यकता होती है और पारलौकिक उन्नति के लिये दीक्षा की। ज्ञान का अडिग विश्वास, अनुभवों का आधार हो तो कठिन से कठिन साधना भी सरल हो जाती है।

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी